

رسالة إلى هندوسي - هندي

निमंत्रण पत्र

شعبة توعية الجاليات بالزلفي

هاتف: ٤٢٣٤٤٦٦ ٠٦ فاكس: ٤٢٣٤٤٧٧ ٠٦ ص.ب: ١٨٢

رسالة إلى هندوسي

بالغة الهندية

تأليف وإعداد : سيد معراج رباني

निमंत्रण पत्र

इस्लामिक दावा ऐन्ड गार्डियन्स सेन्टर,
हाइल, सऊदी अरब.

TEL : 5334748 - 5310116 FAX: 5432211
P.O. BOX : 2843

٢٠١٤ هـ (ح) المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بحائل

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

رباني ، سيد معراج

رسالة إلى هندوسي - الرياض

١٦ ص ؛ ١٢ × ١٧ سم

ردمك : ٠ - ٥ - ٩١٨٧ - ٩٩٦٠

(النص باللغة الهندية)

١ - الإسلام - مبادئ عامة

أ - العنوان

٢٠ / ١٧٣٦

ديوي ٢١١

رقم الايداع ٢٠ / ١٧٣٦

ردمك : ٠ - ٥ - ٩١٨٧ - ٩٩٦٠





विस् मिल्ला हिरहमानिरहीम

पिग्र मित्र !

आशा है आप कुशल पुर्वक होंगे. ये एके धार्मिक पत्र है जो आप की सेवा में भजे रहा हूं इस पत्र का मकसद आप को आपके जन्म के विषय में बतलाना है और ये ज्ञान देना है कि आप का असली जन्म दाता कौन है ? आप को ये सव्च्छ जीवन और शांती से भरा जीवन प्रदान करने वाला और रोजी देने वाला कौन है ? इस संसार को चलाने वाला और इस विशाल आकाश और धरती को बनाने वाला सूर्य और चन्द्रमा उगाने वाला रात्री और दिन को लाने वाला कौन है ? मुझे भरपुर आशा है कि आप इस पत्र को पढ़ कर अवश्य विचार करेंगे और सही मार्ग जानने की कोशिश भी करेंगे !

पिग्र मित्र, इस विशाल संसार का इतना बड़ा गोला और इस में विभिन्न प्रकार की अदुभुती चीजे, और इस में रहते वसते जीव जन्तु ये सब के सब एके ऐसे महान मालिक के अधीन और

उसी के आज्ञा पालन कर रहे हैं उसी के इशारे पर चलते हैं और उसी के गुलाम, प्रजा हैं जो मालिक बहुत बड़ी शक्ति और बहुत बड़ी ताकत वाला है जो जब चाहे जो चाहे जहां चाहे जैसे चाहे सब कुछ कर सकता है उसके कार्यों में कोई भी बाधा नहीं डाल सकता इस विशाल संसार में उसका कोई भी भाग्यदार नहीं उसके ऊपर किसी का हुकम नहीं चलता वो सब का हाकिम है उसने किसी से जन्म नहीं लिया ना ही उसको किसी ने जन्म दिया है ना ही उस से किसी ने जन्म लिया है ! वो अकेला है सब से बेपरवाह है उसके कोई माता पिता नहीं और ना ही उसके बीबी बच्चे हैं वो हमेशा से है और हमेशा रहेगा उसको कभी मौत नहीं आयेगी और ना ही उसको कभी नींद या नीद की झपकी ऊंघ आती है वो विशाल शक्तियों का मालिक है उसे हम , अल्लाह , कहते हैं जिसका अर्थ यह है कि जो मालिक इतनी बड़ी शक्तियों वाला है कि सारा संसार उसी का है और सब कुछ उसी के

अधीन है तो पूजा पाठ का असली हकदार भी वही है!

उसी का हक है कि उसी के सामने झुका जाये माथा टके जाये उसी से विन्ती की जाए उसी से मांगा जाए ओर उसी के लिये अपना जीवन प्रदान कर दिया जाए . उसके अलावा किसी भी जीव जन्तु, देवी देवता या किसी भी जिन्न, भूत , परी को न पूजा जाए ना उनसे कुछ मांगा जाए नाही उनके सामने अपने शीश झुकाए जाएं ओर ना ही ये विश्वास रखा जाये कि अल्लाह के अलावा कोई कुछ बना बिगाड सकता है !

एके बात ध्यान में रहे कि अल्लाहतआल किसी के रुप में उपस्थित नहीं होता और वो ना ही किसी का रुप धारण करता है!

पिय मित्र !

अगर आज्ञा दें तो एके बात पूछू ? हम कितने भोले ओर बुद्धू हैं कि हम उन चीजां की पूजा करते हैं जिन्हें अल्लाह ने हमारे लिये पैदा किया है ! हम उनहे अपना ईश्वर ओर भगवान

मानते हैं जो खदु हमारे गुलाम हैं उनके अनदर तनिक भी शक्ति नहीं कि वो हमारा कुछ बना बिगाड सकें यहां तक कि अगर खदु उन पर कोइ मक्खी बैठ जाए तो वे उसे हंकाल भी नहीं सकते हम कंकर, पत्थर नदी नाले, चन्द्रमां, सुर्य, गाय, बैल पेड, पौधे यहां तक कि लिंग तक के सामने अपना सिर झुका देते हैं! उन से बिनती करने लगते हैं उनकी पूजा पाठ ओर उनके ऊपर चढावे चढाने लगते हैं ओर उनको अपना ईश्वर दाता ओर भगवान मानने लगते हैं भला सोचें तो सही कि वो हमें क्या दे सकते हैं ? वो बोल भी नहीं सकते वो हिल जुज भी नहीं सकते अपना अच्छा बुरा भी नहीं सोच सकते तो वो हमारा क्या बना बिगाड सकते हैं ?

ओर हमारे भोले पन की तो हद होगई कि हमी में से एके मनुष्य गढड से मटटी निकालता है उसे सड़ाता है पैरों ओर हाथों से गूँधता है फिर उससे सरस्वती देवी की या राम, सीता या गणेश की मूर्ती बनाता है मूर्ती बनाते वक्त देवी की छातियों को गोल करता है उनके गाल

संवारता है ओर उनहैं कपडा पहना कर बना संवार कर एके स्थान पर रखता है फिर पंडित जी आते हैं ओर लोग इकट्ठा हो कर उसकी पूजा शुरु कर देते हैं बुन्दियां, जलेबियां, नारियल, फूल पत्तियां ओर रुपेय पैसे चढाये जाते हैं देवी से विन्ती की जाती है वहां सर झुकाए जाते हैं ओर बहुत सी चीजें की जाती हैं जिनकी जानकारी आप को अवश्य होगी !

पश्न यह है कि उस मूर्ती का बनाने वाला कौन है ? एके आम मनुष्य ही तो है जिसने उसको बनाया सजाया संवारा तो किया? भगवान इतना मजबूर है कि वो हमारा तुम्हारा मुहताज हो ? फिर मट्टी की बनाई हुई वो मूर्ती क्या अल्लाह हो सकती है ? वो तो बोल भी नहीं सकती सुन भी नहीं सकती देख भी नहीं सकती चल फिर भी नहीं सकती या उस पर खान पान जो चढाये जाते हैं वो उसे खा पी भी नहीं सकती बल्कि अगर उसके मुंह को कुत्ता चाटने लगे तो वो उसे भगा भी नहीं सकती जरा विचार की जीये कि अगर वो इतनी ही शक्ति शाली होती

तो खदु बखुद बन जाती वो किसी मनुष्य के बनाने की मुहताज न रहती फिर जिसके अनदर कुछ भी ताकत नाहो अपने हृदय से पूछिये कि वो मूर्तीयाँ या देवी देवता ईश्वर कैसे हो सकते हैं ? जो इतना मजबूर लाचार व बेबस हों वो भगवान कैसे हो सकता है? भगवान तो बहुत बडा है वही सारे संसार का मालिक है धरती ओर अकाश मे जो कुछ भी है सब उसी के अधिकार मे है कोइ भी जीव जो इस धरती पर जन्म लेता है वो उसकी पकड से बाहर नहीं है वो उसके पैदा होने पलने बढ़ने और मरने तक की जगहों को जानता है अल्लाहतआला अपनी पवित्र किताब मे फरमाता है .

ऐ लोगो अपने पालनहार की आज्ञा का पालन करो जिसने तुम्हे ओर उनलोगोको जो तुम से पहले आए थे जन्म दिया ताकि तुम सज्जन पुरुष बन जाओ जिसने तुमारे लिये धरती को फर्श तथा आकाश को छत बनाया , ओर उस से बारिश उतारी फिर उसके माध्येम से फल आदी उत्पन्न किया इसलिए तुम अल्लाहतआला

का भाग्यदारा किसी को न बनाओ ओर यह तुम जानते हो!

अब आप सोचें कि हम कितने भटके हुये हैं सही मार्ग से कितने दूर हैं ओर कितने भोले हैं कि उस अल्लाहतआला को छोड़ कर जिसने हमें पैदा किया प्यारी प्यारी आँखें दी नाक दी, हाथ पैर दिये, जुबान दी, चलने ओर काम करने की ताकत दी, सोच विचार करने ओर सही गलत सोचने के लिय बुद्धि दी उस अल्लाहतआला को छोड़ कर हम अपने हाथों की बनाई हुई देवी देवताओं की मूर्तियों ओर कंकर व पत्थर को अपना ईश्वर बनाकर पूजते हैं उनके फोटू तक को पूजते हैं उनसे दया की भीक मांगते हैं उनसे अपने दुख दर्द बयान करते हैं ओर उन्हें अपने भले बुरे का मालिक समझते हैं ये उस अल्लाहतआला के साथ बहुत बड़ा अन्याय है जिसने आपको जन्म दिया ओर जो आपको आहार देता है और खिलाता पिलाता है!

पिप्र मित्र जो लोग अपने मालिक के गददार होते हैं वे किसी के साथ वफा नहीं कर सकते

यही कारण है कि हिन्दू समाज स्पष्ट तौर से टूट कर बिखर चुका है क्योंकि हिन्दुओं की एके भारी संख्या जो अपने आपको हिन्दू समझती है वो ब्राह्मणवाद के जुल्म व सितम ओर जात पात की चक्की में पिसते पिसते हिन्दू ईजम से उक्ता चुकी है ओर ब्रह्मणों के बनाए हुए नियमों को निहायत ही घृणा से देख रही है!

यह एके कड़वा सत्य है कि हिन्दू धर्म कोई धर्म नहीं है बल्कि यह प्राचीन काल में लोगों के खदु अपनी बुद्धि से बनाये हुये जीवन गुजारने के नियम है मगर इस्लाम तो यह , अल्लाहतआला, की अजीम निअमत है जो उसने सारे संसार के लोगों को तोहफे के तौर पर दिया है यही कारण है कि अल्लाहतआला के इस बनाए हुये नियम में इन्सानों के बीच कोई उंच नीच नहीं ओर ना ही कोई जात पात का भेद भाव है ओर न ही कोई छूत छात है , अल्लाहतआला के यहां सब बराबर हैं उसने सबको एके ही मां बाप से पैदा किया है उसके यहां कोई छोटा बड़ा नहीं उसके यहां

बड़ा वही है जो सब से ज्यादा उसका सम्मान करता हो और उस से डरता हो !

पन्तु आप ज़रा हिन्दु धर्म पर दृष्टी डालें तो बड़ा आश्चर्य होता है कि हिन्दू धर्म नें किस तरह सारे मनुष्य को चार टकुडों में बांट रखा है ओर ये विश्वास रखा हुआ है कि ब्राह्मण ने ब्रह्म्मा के सर से जन्म लिया है इसलिये सारे सन्सार में वही पवित्र ओर ईश्वर का मित्र है , क्षत्री ब्रह्म्मा के भजाओ से पैदा हुआ है, वेश्य ब्रह्म्मा के टांगों से पैदा हुआ है , शोधिष्य ब्रह्म्मा के निचले पावों से पैदा हुआ है ! इन चारों वरगों मे हर एके का काम अलग अलग है ब्राह्मण को पूरी स्वतन्त्रता हासिल है वो जो चाहे हिन्दू समाज मे करे जिसकी भी बहू बेटी ले ले उसको कुछ भी नहीं कहा जाएगा ओर जिसका भी माल खाले उसके लिये हलाल है शोध ब्रह्मण की सेवा के लिये जन्म लिया है उसका सब कुछ ब्रह्मण के लिये है वो उसी का गुलाम है उस बेचारे को पवीत्र गीता पढने तक की इजाजत नहीं उसे मन्दिर में पूजा पाठ करने यहां तक कि

उसे अन्दर जाने तक की अनुमती नहीं मिलती उसे छतू समझा जाता है भला विचार करें कि क्या ईश्वर इस तरह अपने प्रजाओं पर अत्याचार कर सकता है ? कभी नहीं वो इस तरह अपने मानने वालों के बीच फर्क नहीं करता वो अल्लाहतआला तो अपने पवित्र कुरआन मे यह कहता है !

एँ लोगो मैंने तुम सबको पैदा किया है तुम सब के मां बाप एके है मैंने इस लिये तुम सब को अलग अलग रखा हुवा है ताकी तुम एक दूसरे से पेम्न ओर मेल व्यवहार करो याद रखो तुममें मेरा नजदीकी वही है जो सब से ज्यादा हम से डरने वाला है .

यह है अल्लाहतआला का आदेश ओर उसका पैगा़म ओर यही है इस्लाम की पुकार .

ओर इस्लाम नाम है अल्लाहतआला के आदेशो का अनुर्वतन ओर उसका आज्ञापालन करना ओर इस्लाम शब्द का एक दूसरा अर्थ भी है सुलह, शान्ती, कुशलता, संरक्षण, शरठा आदि , मनुष्य को वास्तविक शान्ती उसी समय

मिलती है जब वोह अपने आपको अल्लाहतआला के अर्पण करदें और उसी के आदेशों के अनुसार जीवन गुजारने लगें ! ऐसे ही जीवन से दिल को शान्ती मिलती है ओर समाज मे भी उसी से वास्तविक शान्ती की स्थापना होती है वास्तव मे अगर हम देखें तो दुन्या में जितनी चीजें हैं सब मुसलमान हैं चांद, और तारे, पृथ्वी ओर आकाश, सूर्य ओर प्रकाश ताप ओर जल आदी यह सब अल्लाहतआला ही के बनाए हुवे नियम ओर विधी के अधीन हैं क्योंकि अल्लाहतआला ने उन के लिये जो भी मार्ग नियत किया है ये सब उसके तनिक भर खिलाफ नहीं करते ! ओर मनुष्य भी अगर अपने शरीर मे विचार करे तो उसे पता चल जाऐ गा कि उसके शरीर का एके एके अंग वही काम कर रहा है जो उस के लिये निशचित है ओर रीति से कर रहा है जो उसे बता दी गई है !

ये प्रबल नीयम जिस में बडे बडे ग्रहों से लेकर भूमी का छोटे से छोटा कण तक जुडा है एके महान शासक का बनाया हुआ नियम है

ओर पूरी दुनिया उसी शासक के आदेश ओर उसी के आज्ञा का पालन करती है इस लिये समर्पण विश्व का धर्म इस्लाम है!

पिग्र मित्र अन्त मे हम आप से यह कह कर अनुमती चाहते हैं कि आप इसलाम धर्म को उसके नियमों ओर उसके आदेशों को पढे ओर विचार करें कि क्या हम वास्तव में अपने मालिक अल्लाहतआला, के वफादार हैं ?

धन्यवाद
आप का मित्र
सय्यद मेराज रब्बानी

